कक्षा - दसवीं

विषय :- सामाजिक विज्ञान (भूगोल - समकालीन भारत-2)

पाठ-1, शीर्षक - 'संसाधन और विकास'

'संसाधन की परिभाषा' :- प्रत्येक वह वस्तु जो हमारे पर्यावरण में उपस्थित है, जिसे हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग किया जा सकता है एवं सभी को संसाधन कहा जाता है।

'संसाधनों के प्रकार'

- प्राकृतिक
  - नवीकरणीय योग्य
    - सतत या प्रवाह जैसे - हवा, पानी
    - जैविक
      - प्राकृतिक वनस्पति (वन)
      - वन्यजीवन
  - अनवीकरणीय योग्य
    - पुनः चक्रीय जैसे - धातु
    - अचक्रीय जैसे - जीवाश्म ईंधन
- मानवीय
  - संरचना एवम् संस्थाएँ
  - मात्रा एवम् गुणवत्ता

Scanned with CamScanner

नवीकरणीय एवम् अनवीकरणीय संसाधन में अन्तर

नवीकरणीय संसाधन	अनवीकरणीय संसाधन
1. ऐसे संसाधन जो समय के साथ नवीकरण की योग्यता रखते हैं।	1. ऐसे संसाधन जिन्हें पुन: उपयोग या पुन: उत्पन्न नहीं किया जा सकता।
2. इनके प्रचुर मात्रा में स्त्रोत व भण्डार उपलब्ध हैं।	2. इनके स्त्रोत व भण्डार सीमित हैं।
3. सौर ऊर्जा, जल ऊर्जा, पवन ऊर्जा इसके उदाहरण हैं।	3. डीजल, कोयला, पेट्रोल, प्राकृतिक गैस इसके उदाहरण हैं।

'स्वामित्व के आधार पर संसाधनों का वर्गीकरण'
Classification of Resources on the basis of ownership

- व्यक्तिगत संसाधन
- सामुदायिक संसाधन
- सार्वजनिक संसाधन
- राष्ट्रीय संसाधन
- अंतर्राष्ट्रीय संसाधन

'संसाधनों का संरक्षण' Conservation of Resources

:- भावी पीढ़ी के सतत लाभ के लिए संसाधनों का उचित उपभोग करना ही संसाधन संरक्षण कहलाता है।

"संसाधन संरक्षण करने के तीन कारण"

(i) संसाधनों का सीमित मात्रा में उपलब्ध होना।
(ii) कई संसाधनों का अनवीकरणीय होना।
(iii) भावी पीढ़ी के लिए

वन-रोपण (Afforestation)

:- किसी क्षेत्र को जंगल व वन क्षेत्र में परिवर्तित करना ही वन-रोपण कहलाता है।

⇒ संसाधनों के संरक्षण के उपाय :-

(i) अनावश्यक संसाधनों का उपयोग न किया जाए।
(ii) संसाधनों के संरक्षण के लिए संसाधन नियोजन पर जोर दिया जाए।
(iii) नवीकरणीय संसाधनों के उपयोग पर अधिक बल दिया जाए।

☆ "भूमि उपयोग का प्रारूप"

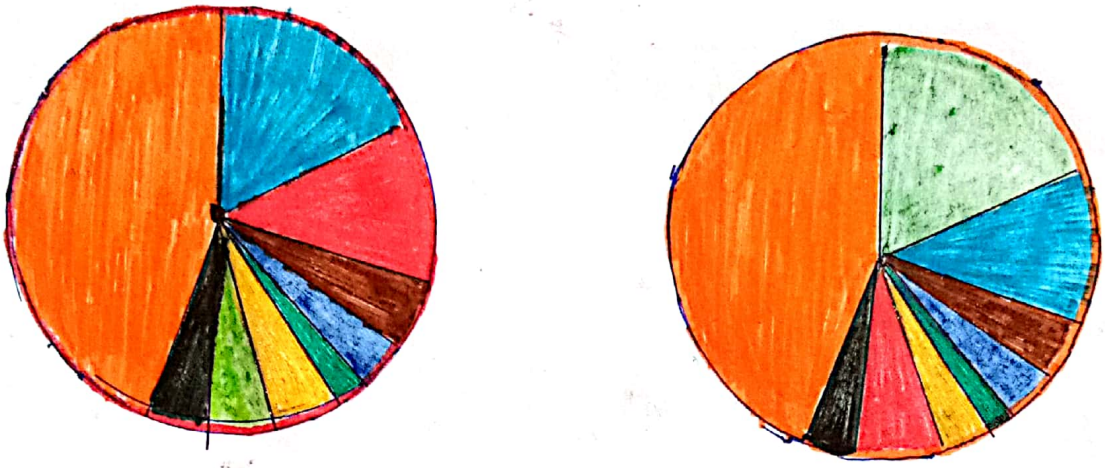

- वन
- बंजर तथा कृषि अयोग्य भूमि
- कृषि के अतिरिक्त अन्य प्रायोजनों हेतु
- स्थायी चरागाह
- विविध वृक्ष, फसल व उपवन
- कृषि योग्य बंजर भूमि
- पुरातन परती भूमि
- वर्तमान परती भूमि
- शुद्ध (निवल बोया गया क्षेत्र)

'भारत में मृदाएँ'

परिभाषा :- भूमि की सबसे ऊपरी उपजाऊ परत को ही मृदा कहते हैं। इसे अंग्रेजी में soil कहा जाता है।

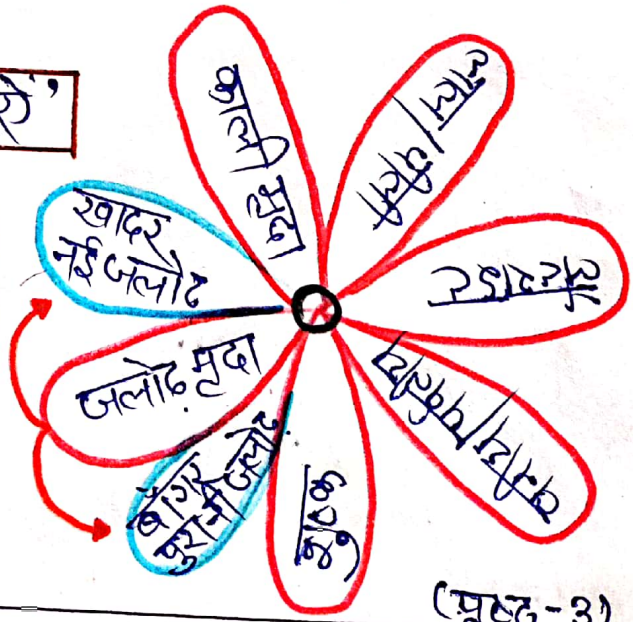

भारत में मृदाओं के प्रकार ➡

मृदा अपरदन के कारण

★ मृदा अपरदन की परिभाषा :- मृदा का कटाव या अपने स्थान से कटाव होने से मृदा की परत का उखड़ना मृदा-अपरदन कहलाता है।

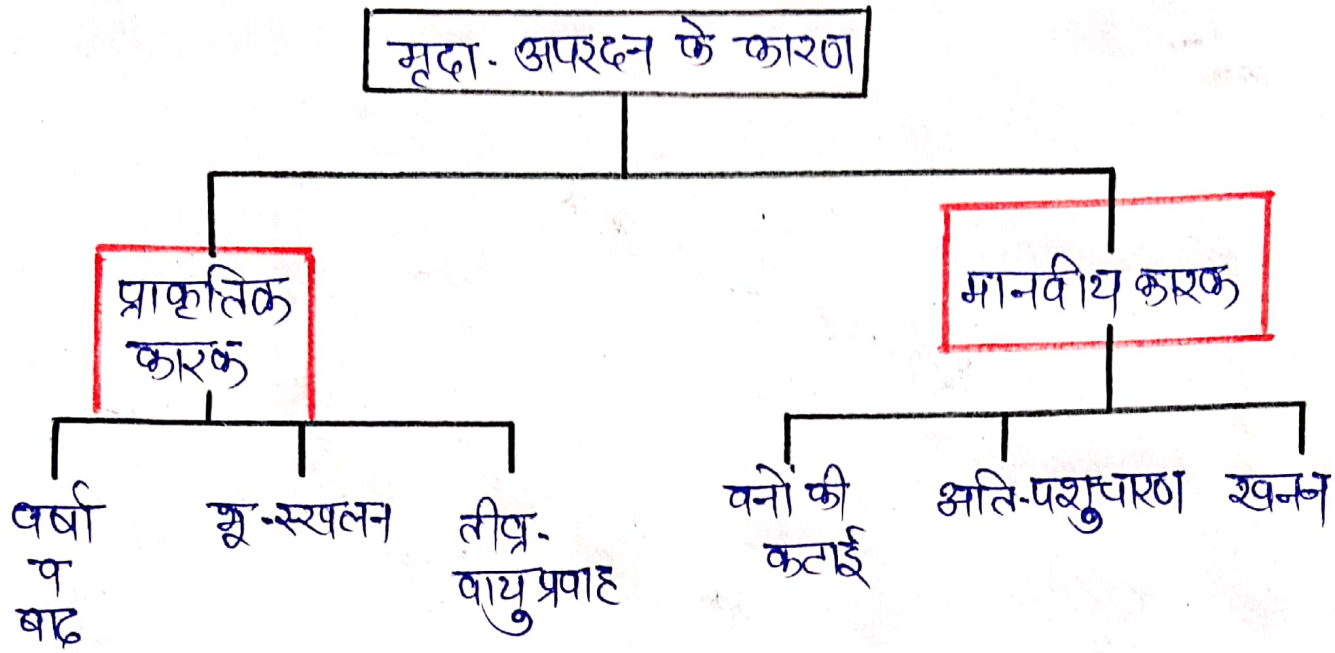

'मृदा-अपरदन के परिणाम'

1. भूमि-निम्नीकरण में वृद्धि
2. बंजर भूमि क्षेत्र में वृद्धि
3. कृषि-उत्पादन के क्षेत्र में कमी
4. कृषि-आधारित औद्योगिक क्रिया-कलापों पर नकारात्मक प्रभाव

'मृदा-अपरदन को नियंत्रित करने के उपाय'

- वृक्षारोपण
- सीढ़ीदार खेती
- पशुचरण नियंत्रण
- उर्वरकों का सीमित उपयोग

Scanned with CamScanner

भारत में मृदाओं का वर्गीकरण

- पर्वतीय मृदा
- जलोढ़ मृदा
- काली मृदा
- लाल व पीली मृदा
- शुष्क मृदा
- लैटेराइट मृदा

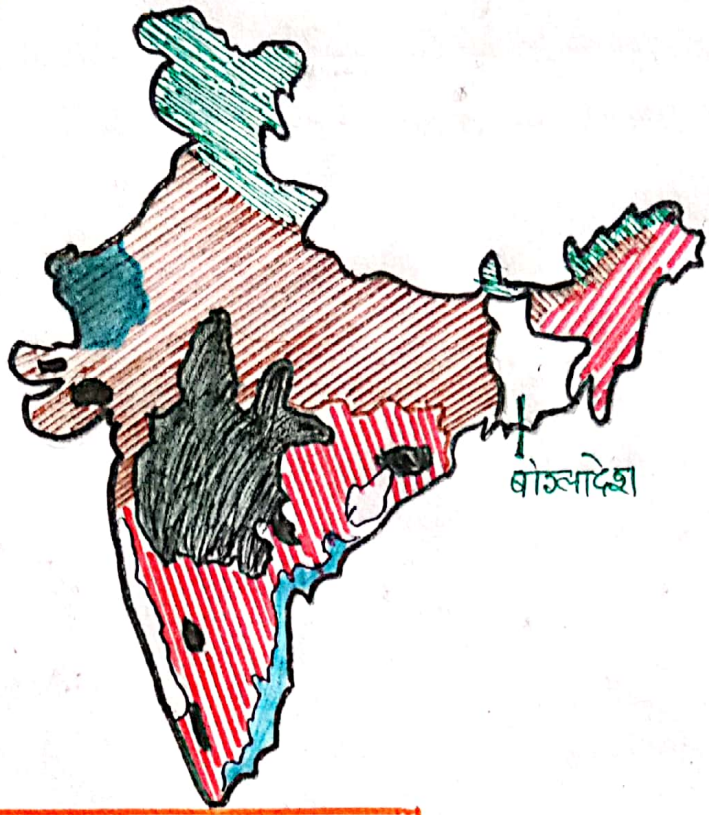

मूल्यांकन हेतु कार्य

→ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. संसाधन नामक शब्द को परिभाषित कीजिए?
2. संसाधन को प्रमुख कितने भागों में बाँटा गया है?
3. स्वामित्व के आधार पर संसाधनों का वर्गीकरण कीजिए?
4. नवीकरणीय व अनवीकरणीय संसाधनों में कोई दो अन्तर बताइये?
5. संसाधनों का संरक्षण करना क्यों आवश्यक है?
6. जीवाश्म ईंधन को परिभाषित कीजिए?
7. पन-शेपण क्या है?
8. मृदा नामक शब्द से आप क्या समझते हैं?
9. भारत में कितने प्रकार की प्रमुख मृदाएँ पाई जाती हैं?
10. मृदा अपरदन के कोई दो कारण व कोई दो परिणाम बताइये?

→ 'संसाधनों का हमारे जीवन में महत्व' नामक विषय पर लगभग 100 शब्दों का एक अनुच्छेद तैयार करें।

→ अपने आस-पास उपयोग होने वाले मानव-निर्मित संसाधनों की एक सूची बनाएँ।

→ मानचित्र कार्य :- भारत के मानचित्र पर भारत में पाई जाने वाली मृदाओं को विभिन्न रंगों की सहायता से दर्शाइये।

(पृष्ठ 5)

Scanned with CamScanner